8. प्रतिवेदन का मूल भाग :- प्रतिवेदन के मूल भाग में निम्न लिखित चार अंश तार्किक क्रम में व्यवस्थित होते हैं —

1. भूमिका या प्रस्तावना
2. अध्ययन की विधि
3. सामग्री का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या
4. सारांश एवं निष्कर्ष।

1. भूमिका या प्रस्तावना —

* प्रास्तावना के अन्तर्गत अनुसंधानकर्ता समस्या के स्वरूप एवं प्रकृति का विश्लेषण करता है; इससे संबंधित जो अध्ययन हो चुके हैं, उनका विवेचन कर उनकी सीमाओं की ओर ध्यान आकर्षित करता है। प्रस्तुत अध्ययन में उन अनुसंधानों का संबंध दिखाते हुए उसकी आवश्यकता तथा महत्व की चर्चा करता है।

* समस्या के विभिन्न पक्षों को विश्लेषण करते हुए, वह अपने अनुसंधान की समस्या का सीमांकन एवं कथन करता है। तत्पश्चात कुछ

Page:
Date: / /

अवधारणाओं के देते हुए परिकल्पनाएँ निश्चित करता है।

* परिकल्पनाओं के वर्णन के उपरान्त विशेष शब्दावली की परिभाषाएँ देता है।

* अन्त में; अध्ययन की सीमा को निश्चित कर देता है। इससे अनुसंधान प्रतिवेदन के संबंध में एक स्पष्ट धारणा बन जाती है कि इस अनुसंधान की समस्या क्या है, क्यो है तथा उनका अध्ययन किन तथ्यों पर आधारित है।

2. अध्ययन की विधि :-

* अनुसंधानकर्ता इसमें आकड़ो का प्रकार, न्यादर्श की संख्या, प्रकार तथा चयन की विधि, उनके लिंग, आयु, पूर्व-अनुभव अथवा निष्कर्ष पर विशेष प्रभाव डालनेवाली कोई अन्य विशेषता, कब और कैसे आकड़े लिये गए, उनकी संख्या जिन्होंने अध्ययन में पूर्णरूप से सहयोग नही किया उसका कारण, प्रयोग की वास्तविक विधि, प्रयोगात्मक नियंत्रण, चरो की परिवर्तन की विधि, वे चर जिनका नियंत्रण नही किया जा सका तथा उनके द्वारा डाले गए संभावित प्रभाव, विषयों को दिए गये निर्देश, यदि कोई पूर्व अध्ययन किया गया था तो उसके निष्कर्ष तथा वर्तमान अध्ययन हेतु चयन की गयी विधि की सार्थकता आदि का निश्चित और विस्तृत वर्णन करता है।

* ~~सभी~~

Page:
Date: / /

* इसी के अन्तर्गत वह उस उपकरण का वर्णन करता है जिसका प्रयोग आकड़ों के संग्रह में किया गया है। यदि नये उपकरण बनाये गये हैं अथवा किसी पुराने उपकरण में संशोधन अथवा परिवर्धन किया गया है तो उसकी विधि तथा वैधता एवं विश्वसनीयता आदि का भी वर्णन करता है।